महिला सशक्तिकरण पर पर्यावरण का प्रभाव

डॉ0 राम कृष्ण पाण्डेय*

प्रस्तुत शोध में इण्टरमीडिएट के छात्राओं की विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि पर पर्यावरणीय अभिवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन किया गया है, जो महिला सशक्ति का आधार है। विभिन्न विद्यालयों की कक्षा–12 में अध्ययनरत बालिकाओं पर डॉ. एन. एन. श्रीवास्तव एवं कु0 शशि प्रभा दूबे द्वारा निर्मित पर्यावरणीय अभिवृत्ति मापनी का प्रशासन कर उसके फलांकन के आधार पर उच्च एवं निम्न पर्यावरणीय समूह में 220–220 छात्राएं न्यायदर्श के लिये चुनी गयी। तत्पश्चात इण्टरमीडिएट परीक्षा में विज्ञान विषय के प्राप्तांकों को तालिका बद्ध कर उनकी विज्ञान विषय की उपलब्धि को ज्ञात कर लिया गया। परिणाम प्राप्त हुआ कि उच्च पर्यावरणीय अभिवृत्ति का बालिकाओं के विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जो महिला सशक्तिकरण को अत्यधिक बल प्रदान करता है।

महिला समाज की रीढ़ होती है। मानव जीवन के सर्वागीण विकास में महिलाओं की अहम् भूमिका रही है, जिसनें वृहद्रूपेण समाज का चतुर्दिक विकास किया है। महिलाओं की स्थिति उसकी आर्थिक प्रगति, राजनीतिक सक्रियता तथा उसके वैचारिक आदर्श से निरन्तर प्रभावित होती रही है, साथ ही समाज द्वारा स्थापित प्रतिमानों तथा मूल्यों से भी नारी विषयक व्यवहार निश्चित होता रहा है। स्त्री और पुरूष एक सिक्के के दो पहलू, एक रथ के दो पहिए है। गृहस्थ जीवन एवं सर्वतोमुखी विकास के लिए दोनों का स्वस्थ सम्बर्धन होना आवश्यक है। प्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटो ने तो राज्य के प्रशासन में स्त्री और पुरूष में कोई अन्तर नही किया था। इसके लिये महिलाओं की स्थिति में सुधार कर उन्हें आत्म निर्भर तथा आत्म विश्वासी बनाना आवश्यक है, जो उनके ज्ञान, कौशल कार्य क्षमता, अभिवृत्ति, उपलब्धि सृजनात्मकता पर निर्भर करता है, जिससे महिला सशक्तिकरण प्रभावित होता है, एक स्वस्थ और शिक्षित महिला राष्ट्र की सम्पदा होती है, जिसका सीधा सम्बन्ध प्रकृति से होता है और यह मानव जीवन का मूल आधार है, क्योंकि इसी के अनुसार मनुष्य की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, जैविक एवं अन्य क्रियाएं प्रभावित होती है, परन्तु मानव आज प्रकृति का विनाश कर अपनी भोग वाद सभ्यता के जिस महल को खड़ा किया है अब उसी के तले वह स्वयं दबने लगा है। आज के युग की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि हम अपने प्राचीन भारतीय मूल्यों और संस्कृतियों को भूल रहे है।

प्रकृति व मानव के बीच सह अनुकूलन व सह अस्तित्व ही पर्यावरण का आधार है, तथा इसके लिए चेतना व उत्प्रेरणा आवश्यक है। भावी पीढ़ी की जीवन यात्रा कुंठित त्रस्त व रूग्ण न हो इसके लिये पर्यावरण संरक्षण के प्रति उन्हें सजग करने की आवश्यकता है। उहें पर्यावरण शिक्षा का ज्ञान देकर व्यक्तिगत, पारिवारिक, क्षेत्रीय, राज्य, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्या को सुलझानें के लिए प्रेरित किया जा सकता है, जिसके लिए पर्यावरणीय अभिवृत्ति का होना आवश्यक है। पर्यावरण अभिवृत्ति पर पूर्व किये गये शोध के परिणाम से स्पष्ट होता है। पर्यावरणीय शिक्षा विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति के विकास में सहायक होती है जो अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों की उपलब्धि को प्रभावित करती है।

* असि0 प्रो0 शिक्षाशास्त्र महाराज बलवन्त सिंह पी0जी0 कालेज गंगापुर वाराणसी

सब लोक रोली (1995) ने शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता व अभिवृत्ति का अध्ययन कर पाया कि पर्यावरणीय शिक्षा का पर्यावरणीय जागरूकता व अभिवृत्ति का अध्ययन कर पाया कि पर्यावरणीय शिक्षा का पर्यावरणीय जागरूकता एवं अभिवृत्ति पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। दूबे शशिप्रभा (1994) ने विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों का पर्यावरणीय समस्या के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन एवं उसमें परिवर्तन के लिए मूल्य प्रपत्र के प्रयोग का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों में पर्यावरण समस्या के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पाई जाती है। कपूर डॉ. खेमचन्द्र (2000).10+2 विद्यालयों के शिक्षकों एवं छात्रों की सामाजिक–आर्थिक स्तर के सम्बन्ध में पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति जागरूकता व अभिवृत्ति का अध्ययन कर निष्कर्ष पाया कि जाति व लैंगिक सन्दर्भ में छात्रों को पर्यावरणीय जागरूकता एवं अभिवृत्ति में सम्बन्ध नहीं है, लेकिन सामाजिक–आर्थिक स्तर से पर्यावरणीय जागरूकता एवं अभिवृत्ति प्रभावित होती है। वर्मा अरूण मालवीय डी0 एस0 निगम भूपेन्द्र (2005) ने हाईस्कूल के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति का विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में जाँच कि पर्यावरणीय अभिवृत्ति का उनके उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

उपरोक्त शोध कार्यों का विश्लेषण करने के बाद शोद्यार्थी के अन्दर जिज्ञासा हुई कि पर्यावरणीय शिक्षा से सम्बन्धित पर्यावरणीय अभिवृत्त के सम्बन्ध में अध्ययन किया जाय, जिससे पर्यावरणीय अभिवृत्ति का बालिकाओं की विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का ज्ञान प्राप्त किया जा सके, जिसके द्वारा महिला सशक्तिकरण को बल मिलता है तथा पर्यावरणीय शिक्षा कार्यक्रम को और अधिक सुदृढ़ बनाकर महिला सशक्तिकरण में योगदान दिया जा सके।

उद्देश्य :–

1- इण्टरमीडिएट की छात्राओं की पर्यावरणीय अभिवृत्ति का ज्ञान प्राप्त करना।

2- इण्टरमीडिएट की छात्राओं की पर्यावरणीय अभिवृत्ति का विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव को ज्ञान करना जिसका सीधा सम्बन्ध महिला सशक्तिकरण से है।

परिकल्पना :–

इण्टरमीडिएट की छात्राओं के विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि पर पर्यावरणीय अभिवृत्ति का सार्थक प्रभाव पड़ेगा।

न्यादर्श :–

शोधार्थी ने मऊ जनपद के घोसी तहसील की इण्टरमीडिए में अध्ययनरत छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि से किया, जिसमें पर्यावरणीय अभिवृत्ति के आधार पर 220 उच्च तथा 220 निम्न पर्यावरणीय समूह की छात्राएँ थी।

शोध की परिसीमाएंः–

प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी ने मऊ जनपद के घोसी तहसील के इण्टरमीडिएट की छात्राओं तक सीमित है।

क्षेत्र के दृष्टि से पूर्वाचल जनपद के घोसी तहसील को ही चुना है।

उपकरण :–

1- शोद्यार्थी ने पर्यावरणीय अभिवृत्ति हेतु डॉ. एन. एन. श्रीवास्तव एवं कु. शशि प्रभा दूबे द्वारा निर्मित पर्यावरणीय अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया।

2- शोद्यार्थी ने विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि हेतु 12 वीं कक्षा की इण्टरमीडिएट बोर्ड परीक्षा में विज्ञान विषय के प्राप्तांकों का प्रयोग किया।

शोध विधि :–

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य व प्रकृति सप्रयोजन सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। अतः शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि द्वारा न्यादर्श के रूप में चयनित छात्राओं पर पर्यावरणीय अभिवृत्ति का प्रशासन कर प्राप्त फलाकों के आधार पर छात्राओं को उच्च एवं निम्न पर्यावरणीय अभिवृत्ति समूह में वर्गीकृत किया गया तथा इन्हीं छात्राओं के इण्टरमीडिएट बोर्ड परीक्षा विज्ञान विषय के प्राप्तांकों को शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करने के लिए तालिका बद्ध किया।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :–

शोधार्थी ने शोध से प्राप्त परिणामों का विशेषरूप निम्नलिखित तालिका के माध्यम से किया–

तलिका–1

उच्च व निम्न पर्यावरणीय अभिवृत्ति समूह वाले छात्राओं की विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि सम्बन्धी तुलनात्मक परिणाम

पर्यावरणीय अभिवृत्ति का समूह	छात्राओं की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	पी0 मान
उच्च समूह	220	55.52	13.39	0.90	6.33	<0.01
निम्न समूह	220	47.34	13.37	0.92		

स्वतंत्रता के अंश 438, 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका सं0– 1 में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट होता है कि उच्च एवं निम्न पर्यावरणीय अभिवृत्ति समूह की छात्राओं की विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है क्योंकि उच्च पर्यावरणीय अभिवृत्ति समूह की छात्राओं की विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि निम्न पर्यावरणीय अभिवृत्ति समूह की छात्राओं अपेक्षाकृति अधिक है। इससे स्पष्ट होता है कि पर्यावरणीय अभिवृत्ति का विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। अतः परिकल्पना सिद्ध होती है।

निष्कर्ष :–

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि पर्यावरणीय अभिवृत्ति का छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि पर सकारत्मक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि उच्च पर्यावरणीय छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि निम्न पर्यावरणीय अभिवृत्ति की छात्राओं को अपेक्षाकृत उच्च है। स्पष्ट है कि छात्राओं, कार्य कौशलों ज्ञान भण्डार में वृद्धि अर्थात् उनकी शैक्षिक उपलब्धि के विकास में सहायता उत्पन्न करती है, जो महिला सशक्तिकरण के लिए आवश्यक है। महिलाओं में अपने आस–पास के पर्यावरण के प्रति अध्ययन सम्बन्धी आदतों कौशलों, अध्ययन के प्रति एकाग्रता, लगन, रूचि, अधिक श्रम करने की आदत आदि का विकास कर महिला सशक्तिकरण को और अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

कपूर डॉ. खेमचन्द्र (2000)	एनवायर्नमेन्टल अवेयरनैस एण्ड एटिट्यूड टूवर्डस एनवायर्नमेन्टल एजुकेशन इन रिलेशन ऑफ इकोनामिकल स्टेट्स ऑफ सोशियों स्टूडैन्टस एण्ड टीचर्स ऑफ 10+2 स्कूल्स ऑफ अरूणाचंल प्रदेश पी–एच0डी0 शिक्षा अरूणाचंल विश्वविद्यालय।
दूबे शशि प्रभा (1994)	'ए स्टडी ऑफ दी एटिट्यूड ऑफ स्टूडैन्ट्स, टीचर्स एण्ड पेरेंट्स टूवर्डस एनवायर्नमेन्टल प्रोबलम्स ऑफ यूजिंग वेल्यू शीट्स टू मोडिफाई इट' पी–एच. डी शिक्षा रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर।
सबलोक रोली (1995)	'ए स्टडी ऑफ दी अवेयरनैस, एटिट्यूड ऑफ टीचर्स एण्ड स्टूडेन्ट ऑफ हाईस्कूल टूवर्डस एनवायर्नमेन्टल एजुकेशन इन जबलपुर डिस्ट्रिक्स' पी–एच. डी शिक्षा रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर।
वर्मा अरूण, मालवीय डी0 एस0, निगम भूपेन्द्र (2005)	भारतीय आधुनिक शिक्षा एन0सी0इ0आर0टी0 जुलाई 2005 पृष्ठ– 88–95
कपिल एच0 के0	अनुसंधान विधियाँ हरिप्रसाद भार्गव आगरा 1984
कपिल एच0 के0	सांख्यिकी के मूल तत्व (सामाजिक विज्ञान में) विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2
जैन वी0 एम0	रिसर्च मेथोलॉजी, रिसर्च पब्लिकेशन जयपुर 1989
पाण्डेय, के0 पी0	शैक्षिक अनुसंधान की रूप–रेखा अनिता प्रकाशन मेरठ, 1991
माथुर, एस0 एस0	शिक्षा मनोविज्ञान विनोद प्रकाशन मन्दिर (1988)
सारस्वत, मालती	शिक्षा मनोविज्ञान की रूप–रेखा आलोक प्रकाशन इलाहाबाद, 1993